24-8-68 ओम शान्ति प्रातः क्लास

मीठे-2 रूहानी बच्चे समझते है जानते है कि पहले-2 सुप्रीम बाप है। सुप्रीम शिक्षक भी है। विश्व की आ: म: अ: का राज समझाते है तो सुप्रीम गुरु भी है। तो यह हो गई सतगुरु की दरबार। दरबार साहब होता है नां। गुरु की दरबार। वो है सिर्फ गुरु। सतगुरु नही है। श्री-2-108 कहलावेंगे। सतगुरु लिखा हुआ नही है। वो लोग तो सिर्फ गुरु ही कहते है। यह है सतगुरु। पहले बाप, फिर टीचर फिर गुरु ही सदगति देते है। सत, त्रेता मे तो फिर गुरु होते ही नही है। क्योंकि सभी सदगति मे है। एक सतगुरु मिलता है तो बाकी सब गुरुओं का नाम खलास हो जाता है। सुप्रीम गुरु तो हुआ सब गुरुओं का गुरु। जैसे पतियों का पति कहते है नां। सबसे ऊंच होने कारण ऐसे कहते है। तुम बच्चे जानते हो कि सुप्रीम बाप के पास हम बैठे है। किसलिये? बेहद का वर्सा लेने। यह है बेहद का वर्सा। बाप भी है तो शिक्षक भी है। और यह वर्सा है नई दुनियां अमरलोक के लिये। वाईसलेस वर्ल्ड के लिये। यह तो सब जानते ही है कि वाईसलेस वर्ल्ड नई दुनियां को ही कहा जाता है। विकारी दुनियां पुरानी दुनियां को कहा जाता है। यह तो दुनियां मे कोई भी नही जानते है। उनको तो पता भी नही है कि निर्विकारी दुनियां उसको कहा जाता है। इसको ही शिवालय कहा जाता है। क्योंकि शिव बाबा का स्थापन किया हुआ है। विष्णु वर्ल्ड बाबा का स्थापन किया हुआ है। अभी तुम बैठे हो गुरु की दरबार मे। यह तो सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। बाप ही शान्ति: का सागर है। वो बाप जब आवे तब ही तो शान्ति: का वर्सा दे। रास्ता बतावे। बाकी जंगल मे तो शान्ति: कहां से मिलेगी? इस लिये ही हार का मिसाल देते है। हार तो गले मे पडा है ढूंढते है बाहर। शान्ति: तो आत्मा के गले का हार है। फिर जब रावण राज्य होता है तब अशान्ति होती है। इसको तो कहा जाता है सुखधाम। शान्ति: धाम। वहां दु:ख की कोई बात नही। महिमा भी सदैव सतगुरु की ही करते है। गुरु की महिमा कब नही सुनी होगी। ज्ञान शान्ति: सुख का सागर वो एक ही है। ऐसे कब गुरु की महिमा नां सुनी है नां कर सकते है। शान्ति: का सागर पतित पावन एक ही बाप है। वो गुरु लोग तो जगत के पतित पावन हो नही सकते है। वो तो एक ही निराकार बेहद के बडे बाबा को कहा जाता है। तुम अभी संगम पर खडे हो। एक तरफ है पतित पुरानी दुनियां। दूसरी तरफ पावन नई दुनियां। पतित दुनियां मे गुरु लोग ढेर है। आगे तो तुमको इस संगम युग का पता ही नही था। अब बाप ने समझाया है। यह है पुरुषोत्तम संगम युग इसके बाद फिर सतयुग आना है। चक्र फिरता रहता है। यह बुधी मे याद रहना चाहिये कि हम तो सभी भाई-2 है। तो बेहद के बाप से वर्सा जरुर कब मिलता है। यह कोई को भी पता नही है। भगवान को ही भिन्न-भिन्न तरीके से कह देते है। इसको ही कहा जाता है अज्ञान अन्धेरा। कितने बडे-2 पोजीशन वाले मनुष्य है। परन्तु जानते तो कुछ भी नही है। कितने बडे-2 गुरु लोग है। गुरु का मान ही जास्ती होता है। सभी गुरु के आगे ही माथा टेकते है। कहते है नां टू मैनी कुक्स ... तो यह गुरु लोग भी बहुत हो गये है। बाप कहते है कि मै तो तुम सबकी सदगति कर देता हूं। फिर दुरगति कौन करता है? जरुर यह गुरु लोग ही करेंगे। ढेर के ढेर गुरु है। तुम्हारा पति भी गुरु कहलाता है। शादी के बाद वो भी गुरु ईश्वर होगा। वो तो पहले-2 आज्ञा ही कैसी करते है? छी-छी कर देते है। वेश्यालय मे ले जाते है। अब तुम सेन्सीबुल बने हो। आगे तो सेन्सलेस थे। कुछ भी पता नही था। इन देवताओं के आगे जाकर ही तुम कहते थे कि हम तो सेन्सलेस है, हमारे मे तो गुण ही कोई नही है। सेन्सीबुल अर्थात गुणवान। आप तो गुणवान है हमारे मे तो कोई भी गुण नही है। आप तरस करो। अब यह (देवताओं के चित्र) तरस करेंगे क्या? यह जानते ही नही है कि रहमदिल कौन है। कहते भी है कि ओ: गाड फादर रहम करो। कहीं भी दु:ख की बात आती है तो बाप को तो जरुर ही याद करते है। अभी तुम तो ऐसे नही कहेंगे। बाप तो है विचित्र। वो ही तुम्हारे सामने बैठा है। तभी तो नमस्ते करते हो। तुम सब तो हो चित्र धारी बाप कहते है कि मै तो विचित्र हूं। मै कब भी चित्र धारन नही करता हूं। मेरे चित्र का कोई भी नाम बताओ। बस शिव बाबा ही कहेंगे। मैने तो यह तोन लिया है। सो भी पुराने ते पुरानी जुत्ती। उसमेंही मै प्रवेश करता हूं। ——→

इस शरीर की महिमा कहीं पर करते है क्या?यह तो पुराना तमोप्रधान शरीर है। रैडाफ्ट किया है तो क्या महिमा करते है क्या?नही। यह तो समझते है कि ऐसा था अबफिर मेरे दवारा गोरा बन जावेगा। अब फिर बाप कहते है कि मै जो सुनाता हूँ उस पर जज करो। अगर मै राईठ हू तो राईट को याद करो। उनका ही सुनो। अनराईटियस तो फिर सुनो ही नही। उनको ईवल कहा जाता है। टाक नो ईवल। सो नो ईवल। इन आखो से भी जो देखते हो उनको भी भूल जाना है। अब तो जाना है अपने घर। फिर वापस सुखधाम मे आवेगे। बाकी यह तो सभी जैसे कि मरे पडे है। टैम्परेरी है। नाँ यह पुरानी दुनियाँ नो ही यह शरीर होगा। नाँ ही यह दुनियाँ होगी। हम पुरुषार्थ कर रहे है दुनियाँ के लिये। जो भी इतने धर्म वाले है कोई भी नही होगा। सभी चले जावेगे। यह पुरानी दुनियाँ थी नही। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट। तुम अपना राज-भाग ले रहे हो। जानते हो कि कल्प-2 बाप आते है राज-भाग देने। तुम भी कहते हो कि हाँ बाबा आपसे तो हम 5000 वर्ष पहले भी मिले थे। राजधानी का वर्सा लिया था। नर से नारायण बने थे। विश्व का मालिक तो बनते हो बाकी सब एकजैसा मर्तबा तो नही पा सकते है। नम्बरवार तो होते ही है। यह है स्प्रीचुअल यूनिवरसिटी। स्प्रीचुअल फादर पढ़ाने वाला है। बच्चे भी पढ़ते है। कोई प्रिन्सीपुल का बच्चा होता है तो वो भी वही लग जाता है। स्त्री भी पढ़ाने लग जाती है। बच्ची भी अच्छी रीती पढ़े तो पढ़ाने लग जाती है। परन्तु वो तो दुसरे घर चली जाती है। यहाँ पर तो कायदा नही है बच्चियों को नौकरी करने का। नई दुनियाँ मे तो नौकरी करने वालों का सारा मदार है यहाँ की पढ़ाई पर। इन बातों को दुनियाँ नही जानती है। लिखा हुआ भी है कि भगवानेवाच्य हे बच्चो मै तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। कोई आडल थोडेई बनाते है। जैसे देवताओं के चित्र बनाते है। तुम तो पढ़ कर वो पद पाते हो। वो तो मिटी के चित्र बनाते है पुजा करने के लिये। यहाँ तो पढ़ाई है। आत्मा पढ़ती है फिर तुम संस्कार ले जाते हो। फिर नई दुनियाँ मे शरीर लेगे। दुनियाँ खत्म नही होती है। सिर्फ सिर्फ समय बदलता रहता है। गोल्डन ऐज सिल्वर.. गोल्डन ऐज मे कैस्ट 16कला सम्पूर्ण था। दुनियाँ तो वो ही चलती रहती है। नई सो पुरानी होती है। नई दुनियाँ मे देवी राजधानी थी। तो बाप तुमको राजाओं का राजा बनाते है। इस पढ़ाई से। सो भी फिर स्वर्ग का। और कोई की ताकत नहीं जो यह पढ़ा सके। कितनी अच्छी रीती पढ़ाते है फिर भी माया अपना बना लेती है। फिर भी जितना-2 जो पढ़ा है उस अनुसार ही वो स्वर्ग मे जरूर आवेगा। कमाई जावेगी नही। अविनाशी ज्ञान का विनाश नही हो सकता है। आगे चलकर आवेगे। जावेगे कहाँ। एक ही हटी है नाँ। फिर भी आते रहेगे। हमेशा श्मशान मे जब मनुष्य जाते है नाँ तो बहुत वैराग आता है। बस क्या यह शरीर ऐसे ही छोडने का है? फिर हम पाप क्यो करे? पाप करते-2 हम ऐसे ही मर जाते जावेगे। ऐसे खयालात आते है। उसको ही कहा जाता है मशानी वैराग। समझते भी है कि जाकर दूसरा शरीर लेगे। परन्तु ज्ञान तो नही है नाँ। यहाँ तो तुम बच्चो को समझाया जाता है कि इस समय तो खास मन्न करने लिये तैयार हो रहे हो। क्योकि यहाँ पर तो टैम्परेरी हो। यह पुराना शरीर छोड नई दुनियाँ मे जाना है। बाप कहते है कि जितना याद करेगे उतना पाप कटेगे। बहुत सहज है। सहज ते सहज भी है तो डिफिकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। बच्चे जब पुरुषार्थ करने लग जाते है तब समझते है कि माया की बहुत यथ है। बाप कहते है कि सहज है परन्तु माया तो दीवा ही बुझा देती है। गुलबकावली की कहानी भी है नाँ। माया बिल्ली दीवा बुझा देती है। यहाँ पर तो सभी माया के ही गुलाम है। सारी प्रकृती तुम्हारी अदब मे रहती है। कोई भी तूफान नही फैमन नही। माया को गुलाम बनाना है। यहाँ पर कब भी माया का वार होगा नही। अभी तो कितना तंग करती है। गायन है नाँ मै गुलाम मै गुलाम तेरा। वो फिर कहती है कि तू गुलाम मेरा। बाप कहते है कि मै अब तुमको गुलाम पने से छुडाने आया हूँ। तुम मालिक बनजावेगे वो गुलाम बन जावेगे। जरा भी चीं-पां नही होती है। यह भी ड्रामा मे नंध है। तुम कहते हो बाबा माया बहुत तंग करती है। सो क्यो नही करेगी? इसको कहा ही जाता है युध का मैदान। माया को गुलाम बनाने लिये तुम कोशिश करते हो। तो माया

भी पछाडतीहै। कितना तंग करती है। कितनो को हराती है कच्चो को तो एकदम ही खा जाती है। हप कलेती है। भल स्वर्ग का मालिक बनते हो परन्तु माया तो खाती रहती है। उनके जैस कि पेट मे है। जो माया के पेट मे थे तो बाकी जाकर पूंछल बची है। बाकी सारा उनके अन्दर मे है। निकल नही सकते है। जिसको ही दुवण भी कहते है। कितने बच्चे दुवण मे पडे हुये है। जरा भी याद नही कर सकते है। यह सब दृश्टान्त है। जैसे कच्चु का भ्रमरी का मिसाल है। भ्रमरी कीडो को ले आती है भु-2 कर आप समान बनादेती है। तुम भी कीडो को भूं-2 कर क्या-2 सुना कर आप समान बना देते हो। एकदम स्वर्ग के परिजाद। सन्यासी भल भ्रमरी का मिसाल देते है परन्तु वो कोई बदलते थोडे ही है। बदली होते ही है संगम पर। अभी यह है संगम युग। तुम क्षुद्र से ब्राहमण बने हो। जो विकारी मनुष्य है उनको तुम ले आते हो। उन मे भी कोई तो भ्रमरी बन जाते है कोई सड जाते है। कोई अधूरे ही रह जाते है। बाबा ने तो यह बहुत देखा है। यहां भी तुम्हारे पास विष्टा के कीडे आते है। कोई अच्छी रीती पढ़ते है ज्ञान के पंख जमते है, कोई को तो आधे मे ही माया पकड लेती है। तो कच्चे ही रह जाते है। तो यह भ्रमरी का मिसाल भी अभी का है। वन्डर है नां। भ्रमरी ले आकर आपसमान बनावे बनावे वण्डर है नां। यह एक ही है जो आप समान बनाते है। दुसरा सर्प का मिसाल देते है। यहां के दृश्टान्त फिर वो उठा लेते है। वो कोई ऐसे करते थोडेई है। सतयुग मे शरीर ऐसे ही छोडते है कि बस एक खल छोडी दुसरी ले लेते है। झट पता पड़ता है कि अब शरीर छोडने वाले है। बस एक शरीर से आत्मा निकल कर दुसरे गर्भ महल मे प्रवेश करती है। जेल आद की कोई बात नही। यह भी एक मिसाल देते है कि गर्भ महल मे बैठा था। उनको बाहर निकलने लिये दिल नही होती थी। फिर भी बाहर आना तो है ही जरूर। अब तुम बच्चे समझते हो कि हम पुरुषोत्तम संगम युग पर है। ज्ञान से ही हम ऐसा पुरुषोत्तम बनते है। भक्ति तो जन्म, जन्म की है। बाप समझाते है कि तुमने सबसे जास्ती भक्ति की है। पहले-2 शिव की भक्ति तुमने ही की होगी। तो जिन्होने जास्ती भक्ति की है वो ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद पावेगे। बाकी शास्त्रो का ज्ञान कोई ज्ञान नही है। वो तो है भक्ति उनसे कोई होती नही सदगति। सदगति माना घर जाना। यहां पर तो कोई घर जाता ही नही है। बाप खुद कहते है कि मेरे साथ कोई मिलता नही है। पढ़ाने वाला साथ ले जाने वाला भी तो चाहिये नां। बाप को कितना ख्याल रहता है। 5000वर्ष मे बाप एक ही बार आकरहम बच्चो को पढ़ाते है। तुम बार-2 यही भूल जाते हो कि हम आत्मा है। यह एकदम पक्का करो। हम आत्माओं को बाप पढ़ाने आया है। इसको ही कहा जाता है स्प्रिचुअल रूहानी नालेज। सुप्रीम रूह हम रूहो को नालेज देते है। संस्कार सब आत्माओं मे रहते है नां। शरीर तो खत्म हो जाता है। आत्मा रह जाती है। तो यह है सतगुरु का दवार। इस आत्मा का भी दवार है। फिर सतगुरु ने भी आकर इन्ही मे प्रवेश किया है। इसको रथ भी कहते है दवार भी कहते है। तुम बच्चे जानते हो कि हम स्वर्ग के मु गेटस खोल रहे है। श्रीमत पर। जितनी अच्छी रीती पढ़ेगेउतना ही सतयुग मे ऊंच पद पावेगे। तो पढ़ना चाहिये नां। टीचर के बच्चे तो बहुत होशियार होते है। परन्तु कहते है नां कि घर की गगां कारिगर्ड नही। बाबा का देखा हुआ है सारा किचरा गगां मे पड़ता है। फिर उनको भला पतित पावनी कहेगे? मनुष्यो की बुधी तो देखो कैसी हो गईहै। देवियो को सजाकर पुजा आद करके फिर डुबो देते है। नानसेन्स ठहेर नां। तो भी बहुत बेइज्जती से डुबोते है। बंगाल की तरफ तो डूबती नही है तो ऊपर पावं रख कर भी डूबोते है। वहां यही रिवाज है। किसीका प्राण निकलने लगता है तो फट वहां ले जाते है कहते है हरि बोल-हरि बोल करते-2 मुख मे पानी गिराते रहते है। ऐसे उनके प्राण निकाल देते है। वण्डर है नां। अभी तुम बच्चो की बुधी मे चढ़ाई उतराई का सारा ज्ञान है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मीठे-2 महारथी घोड़े स्वार प्यादो सभी बच्चो प्रति रूहानी बाप-दादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद प्यार और गुड मार्निंग और नमस्ते अर्थ सहित।